

लोकतांत्रिक व्यवस्था का संकट

इस अध्याय के सभी महत्वपूर्ण प्रश्न – उत्तर सहित। पहले खुद हल करने की कोशिश करो, फिर उत्तर मिलाओ।

अभ्यास प्रश्न-उत्तर (हर टॉपिक से)

» आपातकाल की पृष्ठभूमि और कांग्रेस का बदलता स्वरूप

प्रश्न 1 (आसान). आपातकाल किस वर्ष घोषित किया गया था?

उत्तर – 1975

प्रश्न 2 (आसान). आपातकाल की घोषणा के समय भारत की प्रधानमंत्री कौन थीं?

उत्तर – इंदिरा गांधी

प्रश्न 3 (मध्यम). न्यायपालिका और सरकार के बीच तनाव के क्या कारण थे?

उत्तर – सरकार का मानना था कि न्यायपालिका उसके कल्याणकारी कार्यक्रमों में बाधा डाल रही है, जबकि न्यायपालिका संविधान के सिद्धांतों के अनुसार काम कर रही थी।

प्रश्न 4 (कठिन). 1971 के बाद कांग्रेस के स्वरूप में क्या महत्वपूर्ण बदलाव आए?

उत्तर – कांग्रेस पार्टी पर इंदिरा गांधी का व्यक्तिगत प्रभाव बहुत बढ़ गया था। पार्टी के अंदरूनी लोकतंत्र में कमी आई और निर्णय लेने की शक्ति कुछ ही लोगों के हाथ में केंद्रित हो गई थी।

» आपातकाल के आर्थिक और राजनीतिक संदर्भ

प्रश्न 5 (आसान). 1971 में कांग्रेस ने कौन सा प्रसिद्ध नारा दिया था?

उत्तर – गरीबी हटाओ।

प्रश्न 6 (आसान). बांग्लादेश संकट के दौरान कितने शरणार्थी भारत आए थे?

उत्तर – लगभग 80 लाख।

प्रश्न 7 (मध्यम). अंतर्राष्ट्रीय बाजार में तेल की कीमतों में बढ़ोतरी का भारत की अर्थव्यवस्था पर क्या असर पड़ा?

उत्तर – इससे देश में विभिन्न चीजों की कीमतें तेजी से बढ़ीं, जिससे महंगाई बहुत बढ़ गई और लोगों को आर्थिक कठिनाई हुई।

प्रश्न 8 (कठिन). 1971 के बाद की आर्थिक चुनौतियों ने जन असंतोष को कैसे बढ़ावा दिया? विस्तार से समझाओ।

उत्तर – बांग्लादेश युद्ध के बोझ, तेल की बढ़ती कीमतों के कारण तीव्र महंगाई, बढ़ती बेरोजगारी और खराब मानसून के कारण कृषि उत्पादन में गिरावट ने लोगों के जीवन को बहुत मुश्किल बना दिया। सरकारी कर्मचारियों के वेतन रोकने जैसे कदमों ने भी असंतोष बढ़ाया। इन सभी कारणों से जनता में सरकार के प्रति गुस्सा और निराशा बढ़ी, जिससे गैर-कांग्रेसी पार्टियों को विरोध प्रदर्शनों का नेतृत्व करने का मौका मिला।

» गुजरात और बिहार के छात्र आंदोलन

प्रश्न 9 (आसान). गुजरात में छात्र आंदोलन किस वर्ष शुरू हुआ?

उत्तर – 1974

प्रश्न 10 (आसान). बिहार छात्र आंदोलन का नेतृत्व किसने किया था?

उत्तर – जयप्रकाश नारायण (जेपी)

प्रश्न 11 (मध्यम). गुजरात और बिहार दोनों राज्यों में छात्र आंदोलनों के पीछे मुख्य कारण क्या थे? कोई दो कारण बताओ।

उत्तर – बढ़ती कीमतें, भ्रष्टाचार, खाद्यान्न का अभाव, और बेरोज़गारी।

प्रश्न 12 (कठिन). जयप्रकाश नारायण की 'संपूर्ण क्रांति' का क्या अर्थ था और इसका राष्ट्रीय राजनीति पर क्या प्रभाव पड़ा?

उत्तर – संपूर्ण क्रांति का अर्थ था सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक क्षेत्रों में व्यापक बदलाव लाना ताकि सच्चे लोकतंत्र की स्थापना हो। इसका राष्ट्रीय राजनीति पर गहरा प्रभाव पड़ा, क्योंकि इसने गैर-कांग्रेसी दलों को एक मंच पर लाकर इंदिरा गांधी के नेतृत्व के खिलाफ एक मजबूत विकल्प खड़ा किया, जिससे आगे चलकर आपातकाल की स्थिति बनी।

» न्यायपालिका से संघर्ष और संवैधानिक गतिरोध

प्रश्न 13 (आसान). न्यायपालिका और सरकार के बीच किस वर्ष गहरा संघर्ष देखने को मिला?

उत्तर – 1970 के दशक में, खासकर 1971-1975 के बीच।

प्रश्न 14 (आसान). केशवानंद भारती मामला कब हुआ था?

उत्तर – 1973 में।

प्रश्न 15 (मध्यम). सरकार और न्यायपालिका के बीच संघर्ष के किन्हीं दो मुख्य कारणों को बताएं।

उत्तर – मौलिक अधिकारों में कटौती को लेकर संसद की शक्ति और संविधान संशोधन की शक्ति।

प्रश्न 16 (कठिन). 'संविधान के बुनियादी ढांचे' के सिद्धांत का क्या महत्व है?

उत्तर – यह सिद्धांत संसद को संविधान के मूल स्वरूप को बदलने से रोकता है और न्यायपालिका को संविधान का संरक्षक बनाता है। यह हमारी लोकतांत्रिक व्यवस्था के लिए एक महत्वपूर्ण सुरक्षा कवच है।

» 1974 की रेल हड़ताल

प्रश्न 17 (आसान). 1974 की रेल हड़ताल कितने दिनों तक चली थी?

उत्तर – यह हड़ताल लगभग 20 दिनों तक चली थी।

प्रश्न 18 (आसान). सरकार ने इस हड़ताल को कैसा बताया था?

उत्तर – सरकार ने इस हड़ताल को 'अवैध' बताया था।

प्रश्न 19 (मध्यम). 1974 की रेल हड़ताल किस महीने में हुई थी?

उत्तर – यह हड़ताल मई 1974 में हुई थी।

प्रश्न 20 (कठिन). 1974 की रेल हड़ताल ने भारतीय राजनीति में कौन से बड़े सवाल खड़े किए?

उत्तर – इस हड़ताल ने मजदूरों के असंतोष को उजागर किया और यह सवाल भी उठाया कि क्या आवश्यक सेवाओं से जुड़े कर्मचारी अपनी मांगों को लेकर हड़ताल कर सकते हैं या नहीं।

» इलाहाबाद उच्च न्यायालय का फैसला और आपातकाल की घोषणा

प्रश्न 21 (आसान). इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने इंदिरा गांधी के किस निर्वाचन को अवैध घोषित किया?

उत्तर – 1971 के लोकसभा चुनाव में उनके निर्वाचन को।

प्रश्न 22 (आसान). न्यायालय का फैसला किस तारीख को आया था?

उत्तर – 12 जून 1975 को।

प्रश्न 23 (मध्यम). इंदिरा गांधी के चुनाव को अवैध घोषित करने का मुख्य कारण क्या था?

उत्तर – चुनाव प्रचार में सरकारी कर्मचारियों की सेवाओं का इस्तेमाल करना।

प्रश्न 24 (कठिन). जयप्रकाश नारायण ने आपातकाल की घोषणा से पहले सरकार के खिलाफ कौन सा बड़ा कदम उठाया?

उत्तर – उन्होंने इंदिरा गांधी के इस्तीफे की मांग करते हुए राष्ट्रव्यापी सत्याग्रह की घोषणा की और सेना, पुलिस व सरकारी कर्मचारियों को 'अनैतिक आदेशों' का पालन न करने का आह्वान किया।

» आपातकाल के परिणाम: प्रेस सेंसरशिप और मौलिक अधिकारों पर रोक

प्रश्न 25 (आसान). आपातकाल में किस बात पर रोक लगा दी गई थी जिससे जनता तक सही जानकारी नहीं पहुँच पाती थी?
उत्तर – प्रेस की आज़ादी या प्रेस सेंसरशिप पर रोक लगा दी गई थी।

प्रश्न 26 (आसान). आपातकाल में सरकार ने किन दो संगठनों पर प्रतिबंध लगाया था?

उत्तर – राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) और जमात-ए-इस्लामी पर प्रतिबंध लगाया था।

प्रश्न 27 (मध्यम). आपातकाल के दौरान नागरिकों के मौलिक अधिकारों पर क्या असर हुआ?

उत्तर – नागरिकों के मौलिक अधिकार निष्प्रभावी हो गए थे और वे उनकी बहाली के लिए अदालत भी नहीं जा सकते थे।

प्रश्न 28 (कठिन). आपातकाल के परिणामों में से कौन-सा आपके विचार में लोकतंत्र के लिए सबसे खतरनाक था और क्यों?

उत्तर – प्रेस सेंसरशिप और मौलिक अधिकारों पर रोक सबसे खतरनाक थी। प्रेस सेंसरशिप से जनता तक सही जानकारी नहीं पहुँचती, जिससे वे सही निर्णय नहीं ले पाते। मौलिक अधिकारों पर रोक से व्यक्ति की आज़ादी और सम्मान खतरे में पड़ जाता है, और अदालत जाने का अधिकार न होने से न्याय की उम्मीद खत्म हो जाती है, जो लोकतंत्र के मूल सिद्धांतों के खिलाफ है।

» निवारक नज़रबंदी और सर्वोच्च न्यायालय का विवादास्पद फैसला

प्रश्न 29 (आसान). निवारक नज़रबंदी का क्या अर्थ है?

उत्तर – बिना अपराध किए, भविष्य में किसी अपराध की आशंका पर किसी व्यक्ति को गिरफ्तार करना।

प्रश्न 30 (आसान). सर्वोच्च न्यायालय ने निवारक नज़रबंदी से संबंधित विवादास्पद फैसला कब सुनाया था?

उत्तर – अप्रैल 1976 में।

प्रश्न 31 (मध्यम). सर्वोच्च न्यायालय के विवादास्पद फैसले का नागरिकों के मौलिक अधिकारों पर क्या प्रभाव पड़ा?

उत्तर – नागरिकों के जीवन और स्वतंत्रता के अधिकार को सरकार द्वारा वापस लेने की अनुमति मिल गई, और वे इसे लागू करवाने के लिए अदालतों में नहीं जा सकते थे।

प्रश्न 32 (कठिन). आपातकाल के संदर्भ में, उच्च न्यायालयों के फैसलों और सर्वोच्च न्यायालय के फैसले में क्या मुख्य अंतर था?

उत्तर – उच्च न्यायालयों ने कहा था कि आपातकाल के बावजूद, 'बंदी प्रत्यक्षीकरण' याचिकाएं स्वीकार की जा सकती हैं और गिरफ्तारी का कारण बताना ज़रूरी है। इसके विपरीत, सर्वोच्च न्यायालय ने इन फैसलों को पलटते हुए सरकार की इस दलील को माना कि आपातकाल में सरकार नागरिकों से जीवन और स्वतंत्रता का अधिकार वापस ले सकती है।

» संवैधानिक संशोधन और आपातकाल के विरोध

प्रश्न 33 (आसान). 42वाँ संविधान संशोधन किस वर्ष हुआ था?

उत्तर – 1976 में

प्रश्न 34 (आसान). 42वें संशोधन से लोकसभा का कार्यकाल कितने साल का हो गया था?

उत्तर – 6 साल

प्रश्न 35 (मध्यम). 42वें संशोधन के तहत कौन-कौन से चुनाव को अदालत में चुनौती नहीं दी जा सकती थी?

उत्तर – प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति और उपराष्ट्रपति के चुनाव को।

प्रश्न 36 (कठिन). सेंसरशिप क्या है और आपातकाल में इसका विरोध क्यों हुआ?

उत्तर – सेंसरशिप का मतलब था सरकार की अनुमति के बिना कुछ भी छापने या प्रसारित करने पर रोक। आपातकाल में सरकार ने अखबारों और मैगज़ीन पर सेंसरशिप लगा दी थी, जिससे लोगों की अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता छिन गई थी। इसीलिए अखबारों और लेखकों ने इसका विरोध किया, कईयों ने खाली जगह छोड़ दी या नामों के साथ लेख छापे ताकि पता चले कि यह सेंसर किया गया है।

» आपातकाल के सबक

प्रश्न 37 (आसान). आपातकाल के बाद भारतीय लोकतंत्र को खत्म करना क्यों मुश्किल हो गया?

उत्तर – क्योंकि लोकतंत्र की जड़ें जनता में इतनी गहरी थीं कि कोई भी सरकार इसे पूरी तरह से उखाड़ नहीं पाई और यह थोड़े समय में ही वापस अपनी पटरी पर आ गया।

प्रश्न 38 (आसान). आपातकाल के प्रावधानों में क्या मुख्य बदलाव किया गया?

उत्तर – पहले 'आंतरिक गड़बड़ी' के आधार पर आपातकाल लग सकता था, अब उसे बदलकर केवल 'सशस्त्र विद्रोह' की स्थिति में ही आपातकाल लगाया जा सकता है।

प्रश्न 39 (मध्यम). मंत्रिमंडल की लिखित सलाह को आपातकाल के लिए अनिवार्य क्यों बनाया गया?

उत्तर – ताकि आपातकाल लगाने का फैसला किसी एक व्यक्ति का मनमाना फैसला न हो, बल्कि पूरे मंत्रिमंडल की सहमति और रिकॉर्ड में दर्ज सलाह पर आधारित हो, जिससे जवाबदेही बनी रहे।

प्रश्न 40 (कठिन). आपातकाल के बाद नागरिक अधिकारों के प्रति जागरूकता बढ़ने का लोकतंत्र पर क्या दीर्घकालिक प्रभाव पड़ा?

उत्तर – इस जागरूकता के कारण नागरिक अपने अधिकारों के प्रति अधिक सचेत हो गए, अदालतों ने नागरिक अधिकारों की रक्षा में सक्रिय भूमिका निभानी शुरू कर दी, और कई नागरिक अधिकार संगठन भी वजूद में आए, जिससे भविष्य में सरकार द्वारा अधिकारों के हनन को रोकना कठिन हो गया।

» 1977 के लोकसभा चुनाव और जनता पार्टी का उदय

प्रश्न 41 (आसान). 1977 के लोकसभा चुनाव किस घटना के बाद हुए थे?

उत्तर – आपातकाल (Emergency) के बाद।

प्रश्न 42 (आसान). जनता पार्टी के गठन में कौन-कौन से दल शामिल हुए थे?

उत्तर – कई प्रमुख विपक्षी दल एक साथ आए।

प्रश्न 43 (मध्यम). 1977 के चुनावों को 'आपातकाल पर जनमत संग्रह' क्यों कहा गया?

उत्तर – क्योंकि ये चुनाव सीधे तौर पर आपातकाल के दौरान सरकार के कार्यों पर जनता की राय जानने के लिए थे।

प्रश्न 44 (कठिन). आपातकाल का प्रभाव उत्तर और दक्षिण भारत में चुनावों पर अलग-अलग क्यों पड़ा?

उत्तर – उत्तर भारत में जबरन नसबंदी और विस्थापन जैसे काम ज्यादा हुए थे, जिससे वहां लोगों में नाराजगी ज्यादा थी। दक्षिण भारत में आपातकाल का प्रभाव उतना गहरा नहीं था।

» जनता सरकार का पतन और 1980 के मध्यावधि चुनाव

प्रश्न 45 (आसान). 1977 में जनता पार्टी की सरकार बनने के कितने समय बाद उसका पतन हो गया?

उत्तर – लगभग 28 महीने बाद।

प्रश्न 46 (आसान). 1980 के मध्यावधि चुनावों में किस पार्टी ने सत्ता में वापसी की?

उत्तर – इंदिरा गांधी के नेतृत्व वाली कांग्रेस पार्टी।

प्रश्न 47 (मध्यम). जनता पार्टी सरकार के पतन के कोई दो मुख्य कारण बताइए।

उत्तर – आंतरिक कलह और नेताओं के बीच प्रधानमंत्री पद के लिए होड़; दिशा, नेतृत्व या एक साझे कार्यक्रम का अभाव।

प्रश्न 48 (कठिन). 1977-1980 के घटनाक्रम ने भारतीय लोकतांत्रिक राजनीति के बारे में मतदाताओं को क्या महत्वपूर्ण सबक सिखाया?

उत्तर – इसने सबक सिखाया कि अगर सरकार अस्थिर हो और उसके भीतर कलह हो, तो मतदाता ऐसी सरकार को कड़ा दंड देते हैं और स्थिर व प्रभावी नेतृत्व को प्राथमिकता देते हैं।

» आपातकाल की विरासत: दलीय प्रणाली और पिछड़ी जातियों की राजनीति

प्रश्न 49 (आसान). 1977 के बाद कांग्रेस की निर्भरता किस पर बढ़ गई थी?

उत्तर – एक नेता (इंदिरा गांधी) की लोकप्रियता और एक विशेष विचारधारा पर।

प्रश्न 50 (आसान). 'गैर-कांग्रेसवाद' का मुख्य उद्देश्य क्या था?

उत्तर – गैर-कांग्रेसी वोटों को बिखरने से रोकना ताकि कांग्रेस को हराया जा सके।

प्रश्न 51 (मध्यम). मंडल आयोग का गठन किस सरकार ने और क्यों किया था?

उत्तर – मंडल आयोग का गठन केंद्र की जनता पार्टी सरकार ने 1979 में, पिछड़ी जातियों की स्थिति और उनके लिए आरक्षण की सिफारिशें जानने के लिए किया था।

प्रश्न 52 (कठिन). आपातकाल ने भारतीय दलीय प्रणाली में 'सबको समाहित कर चलने वाले' स्वभाव को कैसे प्रभावित किया?

उत्तर – आपातकाल से पहले कांग्रेस विभिन्न विचारधाराओं को साथ लेकर चलती थी। आपातकाल के बाद, कांग्रेस ने खुद को एक विशेष समाजवादी विचारधारा और गरीबों की हिमायती पार्टी के रूप में प्रस्तुत किया, जिससे उसका 'सबको समाहित कर चलने वाला' स्वभाव बदल गया और वह अधिक नेता-केंद्रित हो गई।

» संविधानिक और राजनीतिक संकट के रूप में आपातकाल

प्रश्न 53 (आसान). आपातकाल के दौरान कौन से दो मुख्य प्रकार के संकट देखे गए?

उत्तर – संवैधानिक संकट और राजनीतिक संकट।

प्रश्न 54 (आसान). क्या आपातकाल में मौलिक अधिकारों को निलंबित किया गया था?

उत्तर – हाँ, मौलिक अधिकारों को निलंबित कर दिया गया था।

प्रश्न 55 (मध्यम). संवैधानिक संकट से आप क्या समझते हैं, आपातकाल के संदर्भ में?

उत्तर – संवैधानिक संकट का अर्थ था कि संसद और न्यायपालिका के अधिकारों में टकराव हुआ और सरकार ने संविधान के नियमों को ताक पर रखकर अपनी शक्तियों का दुरुपयोग किया, जैसे मौलिक अधिकारों का निलंबन।

प्रश्न 56 (कठिन). आपातकाल को 'राजनीतिक संकट' क्यों कहा जाता है, विस्तार से बताएं।

उत्तर – आपातकाल को राजनीतिक संकट इसलिए कहा जाता है क्योंकि सत्ताधारी दल (कांग्रेस) के पास पूर्ण बहुमत होने के बावजूद, उसके नेतृत्व ने लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं को बाधित किया। उसने विपक्ष के नेताओं को गिरफ्तार किया, प्रेस पर सेंसरशिप लगाई, और जन आंदोलनों को बलपूर्वक दबाया, जिससे लोकतांत्रिक मानकों का गंभीर उल्लंघन हुआ। यह जनता की आवाज़ को दबाने का प्रयास था।

हल किए हुए उदाहरण (step-by-step)

उदाहरण 1. आपातकाल की घोषणा के मुख्य कारण क्या थे?

› पहला कारण था भारत में बिगड़ती 'आर्थिक स्थिति' - 1971 के युद्ध और अंतरराष्ट्रीय तेल संकट के कारण महंगाई बहुत बढ़ गई थी और बेरोजगारी भी चरम पर थी।

› दूसरा कारण था 'न्यायपालिका और सरकार के बीच तनाव' - सुप्रीम कोर्ट ने सरकार के कई बड़े फैसलों को संविधान के खिलाफ बताया, जिससे सरकार को लगा कि न्यायपालिका उनके जनकल्याण के कामों में बाधा डाल रही है।

› तीसरा कारण था 'विपक्ष का बढ़ता विरोध' - जयप्रकाश नारायण जैसे नेताओं ने भ्रष्टाचार और महंगाई के खिलाफ देशव्यापी आंदोलन शुरू कर दिए थे, जिससे सरकार पर बहुत दबाव था।

› और चौथा, कांग्रेस पार्टी के भीतर भी इंदिरा गांधी की कार्यशैली को लेकर कुछ मतभेद थे, जिसने पार्टी के स्वरूप को बदल दिया था।

उत्तर – आर्थिक संकट, न्यायपालिका-सरकार विवाद, विपक्ष का बढ़ता जनआंदोलन और कांग्रेस का बदलता स्वरूप - ये सभी मिलकर आपातकाल की घोषणा के मुख्य कारण बने।

उदाहरण 2. 1971 के बाद भारत की आर्थिक स्थिति खराब होने के तीन मुख्य कारण बताओ, जिनके कारण आपातकाल का मार्ग प्रशस्त हुआ।

› पहला कारण था बांग्लादेश संकट और उसके बाद का युद्ध। इससे भारत पर शरणार्थियों का भारी बोझ आया और युद्ध का खर्च भी उठाना पड़ा, जिससे अर्थव्यवस्था पर बहुत दबाव पड़ा।

› दूसरा मुख्य कारण था अंतर्राष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल की कीमतों में बेतहाशा वृद्धि। इससे देश में हर चीज महंगी हो गई और महंगाई दर 1973 में 23% और 1974 में 30% तक पहुंच गई, जिससे आम लोगों को बहुत परेशानी हुई।

› तीसरा कारण था देश के भीतर औद्योगिक विकास की धीमी गति और बढ़ती बेरोजगारी। इसके साथ ही 1972-73 में खराब मानसून के कारण कृषि उत्पादन भी 8% तक गिर गया, जिससे खाद्यान्न की कमी हुई और सरकारी कर्मचारियों के वेतन रोकने पड़े, जिससे उनमें भी असंतोष फैल गया।

उत्तर – 1971 के बाद भारत की आर्थिक स्थिति खराब होने के तीन मुख्य कारण बांग्लादेश युद्ध का बोझ, अंतर्राष्ट्रीय तेल कीमतों में वृद्धि और देश में बढ़ती महंगाई, बेरोजगारी और कृषि उत्पादन में गिरावट थे।

उदाहरण 3. जयप्रकाश नारायण ने बिहार छात्र आंदोलन की अगुवाई किस शर्त पर की थी और उन्होंने 'संपूर्ण क्रांति' से क्या आशय रखा?

› पहला कदम: जेपी ने दो शर्तें रखी थीं - आंदोलन अहिंसक रहे और सिर्फ बिहार तक सीमित न रहे, बल्कि राष्ट्रव्यापी बने।

› दूसरा कदम: 'संपूर्ण क्रांति' से उनका आशय था कि सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक, हर क्षेत्र में बदलाव लाया जाए, सिर्फ सरकार बदलना पर्याप्त नहीं है।

› तीसरा कदम: वे सच्चे लोकतंत्र की स्थापना करना चाहते थे, जहाँ सिर्फ राजनीतिक आज़ादी ही नहीं, बल्कि सामाजिक न्याय और आर्थिक समानता भी हो।

उत्तर – जयप्रकाश नारायण ने छात्रों का निमंत्रण इस शर्त पर स्वीकार किया कि आंदोलन अहिंसक रहेगा और सिर्फ बिहार तक सीमित न रहकर पूरे देश में फैलेगा। 'संपूर्ण क्रांति' से उनका आशय सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक सहित जीवन के हर क्षेत्र में बुनियादी बदलाव लाकर सच्चे लोकतंत्र की स्थापना करना था।

उदाहरण 4. केशवानंद भारती मामले का भारतीय संविधान पर क्या महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा?

› समझें कि केशवानंद भारती मामला 1973 में हुआ था, जब संसद मौलिक अधिकारों और संविधान संशोधन की अपनी शक्ति को लेकर न्यायपालिका से विवाद में थी।

› याद करें कि इस मामले में सुप्रीम कोर्ट ने 'संविधान के बुनियादी ढांचे' का सिद्धांत दिया।

› इस सिद्धांत के अनुसार, संसद संविधान के किसी भी हिस्से में संशोधन कर सकती है, लेकिन वह संविधान के 'बुनियादी ढांचे' को बदल नहीं सकती।

› निष्कर्ष निकालें कि इस फैसले ने संसद की संशोधन शक्तियों पर एक सीमा लगा दी और न्यायपालिका को संविधान का संरक्षक बनाया।

उत्तर – केशवानंद भारती मामले ने 'संविधान के बुनियादी ढांचे' का सिद्धांत स्थापित किया, जिसके तहत संसद संविधान में संशोधन तो कर सकती है, लेकिन उसके मूल स्वरूप (बुनियादी ढांचे) को बदल नहीं सकती। इसने न्यायपालिका को संविधान का संरक्षक बनाया और संसद की शक्तियों पर महत्वपूर्ण सीमा लगाई।

उदाहरण 5. 1974 की रेल हड़ताल का नेतृत्व किसने किया था और इसकी प्रमुख मांगें क्या थीं?

› पहला कदम: हमें हड़ताल के नेतृत्वकर्ता का नाम याद करना होगा।

› दूसरा कदम: हमें हड़ताल की मुख्य मांगों को पहचानना होगा।

› जानकारी के अनुसार, हड़ताल का नेतृत्व 'जॉर्ज फर्नांडिस' ने किया था।

› मुख्य मांगें 'बोनस' और 'सेवा शर्तों' में सुधार से जुड़ी हुई थीं।

उत्तर – 1974 की रेल हड़ताल का नेतृत्व जॉर्ज फर्नांडिस ने किया था, और उनकी प्रमुख मांगें रेलवे कर्मचारियों के लिए बोनस और बेहतर सेवा शर्तों से संबंधित थीं।

उदाहरण 6. इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने इंदिरा गांधी के किस कार्य को अवैध बताया था और इसके जवाब में सरकार ने क्या कदम उठाया?

- › पहला चरण: इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने 12 जून 1975 को एक फैसला सुनाया।
- › दूसरा चरण: इस फैसले में, न्यायालय ने 1971 के लोकसभा चुनाव में रायबरेली सीट से इंदिरा गांधी के निर्वाचन को अवैध घोषित किया।
- › तीसरा चरण: फैसले का कारण यह था कि इंदिरा गांधी ने अपने चुनाव प्रचार में सरकारी कर्मचारियों की सेवाओं का इस्तेमाल किया था, जिसे कानून के खिलाफ माना गया।
- › चौथा चरण: इस फैसले के बाद, जयप्रकाश नारायण के नेतृत्व में विपक्षी दलों ने इंदिरा गांधी के इस्तीफे की मांग करते हुए राष्ट्रव्यापी सत्याग्रह शुरू किया और सेना व पुलिस को 'अनैतिक आदेशों' का पालन न करने की अपील की।
- › पांचवां चरण: इन गंभीर राजनीतिक परिस्थितियों के जवाब में, सरकार ने 25 जून 1975 की रात को अनुच्छेद 352 का प्रयोग करते हुए देश में आपातकाल की घोषणा कर दी।

उत्तर – इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने इंदिरा गांधी के चुनाव प्रचार में सरकारी कर्मचारियों के इस्तेमाल को अवैध बताया था। इसके जवाब में, सरकार ने आंतरिक गड़बड़ी की आशंका का हवाला देते हुए देश में आपातकाल की घोषणा की।

उदाहरण 7. आपातकाल के दौरान प्रेस सेंसरशिप का क्या अर्थ था और इसका क्या प्रभाव पड़ा?

- › समझें कि प्रेस सेंसरशिप का मतलब क्या है: प्रेस सेंसरशिप का अर्थ था कि समाचार पत्रों और अन्य मीडिया को कोई भी खबर या लेख छापने से पहले सरकार की अनुमति लेनी पड़ती थी।
- › कारण पहचानें: सरकार ने इसका इस्तेमाल विरोध-प्रदर्शनों को रोकने और अपनी आलोचना को दबाने के लिए किया।
- › प्रभाव बताएं: इसका मुख्य प्रभाव यह था कि जनता तक सही और निष्पक्ष जानकारी नहीं पहुँच पाती थी। लोग सिर्फ वही खबरें पढ़ते या सुनते थे जो सरकार उन्हें बताना चाहती थी, जिससे लोकतंत्र कमजोर हुआ।
- › निष्कर्ष: यह अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता (मौलिक अधिकार) का हनन था और सरकार की आलोचना को दबाने का एक तरीका था।

उत्तर – आपातकाल के दौरान प्रेस सेंसरशिप का अर्थ था कि समाचार पत्र और अन्य माध्यम सरकार की पूर्व अनुमति के बिना कुछ भी प्रकाशित नहीं कर सकते थे। इसका प्रभाव यह हुआ कि जनता को केवल सरकार द्वारा अनुमोदित जानकारी ही मिलती थी, जिससे नागरिकों की अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता बाधित हुई और सरकार के कार्यों पर कोई खुली बहस या आलोचना संभव नहीं थी।

उदाहरण 8. आपातकाल के दौरान सरकार ने किस प्रावधान का बड़े पैमाने पर इस्तेमाल किया और सर्वोच्च न्यायालय ने इस संबंध में क्या विवादास्पद फैसला सुनाया?

- › पहला कदम: आपातकाल के दौरान सरकार ने 'निवारक नज़रबंदी' (Preventive Detention) नामक प्रावधान का बड़े पैमाने पर इस्तेमाल किया।
- › दूसरा कदम: इस प्रावधान के तहत लोगों को इसलिए गिरफ्तार किया जाता था क्योंकि सरकार को आशंका थी कि वे कोई अपराध कर सकते हैं, न कि उन्होंने कोई अपराध किया था।
- › तीसरा कदम: जिन लोगों को गिरफ्तार किया गया, उन्होंने अपनी गिरफ्तारी को चुनौती देने के लिए 'बंदी प्रत्यक्षीकरण' याचिकाएं दायर कीं, और कई उच्च न्यायालयों ने उनके पक्ष में फैसला सुनाया।
- › चौथा कदम: लेकिन, अप्रैल 1976 में सर्वोच्च न्यायालय की संवैधानिक पीठ ने उच्च न्यायालयों के इन फैसलों को पलट दिया।

› पांचवां कदम: सर्वोच्च न्यायालय ने यह फैसला सुनाया कि आपातकाल के दौरान सरकार नागरिकों के जीवन और स्वतंत्रता के अधिकार को वापस ले सकती है, और वे इसे लागू करवाने के लिए अदालत नहीं जा सकते।

उत्तर – आपातकाल के दौरान सरकार ने 'निवारक नज़रबंदी' का इस्तेमाल किया, जिसके तहत बिना अपराध के आशंका पर गिरफ्तारी होती थी। सर्वोच्च न्यायालय ने 1976 में फैसला सुनाया कि आपातकाल में सरकार नागरिकों से जीवन और स्वतंत्रता का अधिकार वापस ले सकती है, जिससे नागरिकों के लिए अदालतों के दरवाज़े बंद हो गए। इस फैसले को सर्वाधिक विवादास्पद फैसलों में से एक माना गया।

उदाहरण 9. आपातकाल के दौरान 42वें संविधान संशोधन के तहत लोकसभा और विधानसभा का कार्यकाल कितने साल के लिए बढ़ा दिया गया था?

- › हमें यह याद रखना होगा कि आपातकाल के समय सरकार ने अपनी शक्ति बढ़ाने के लिए कई संवैधानिक बदलाव किए थे।
- › इन्हीं बदलावों में से एक था विधायी निकायों के कार्यकाल में वृद्धि करना।
- › इस संशोधन में सीधे तौर पर लोकसभा और विधानसभा दोनों के कार्यकाल को बढ़ाया गया था।
- › यह वृद्धि 5 साल से बढ़ाकर 6 साल के लिए की गई थी, ताकि सरकार को दोबारा चुनाव का सामना तुरंत न करना पड़े।

उत्तर – लोकसभा और विधानसभा का कार्यकाल 5 साल से बढ़ाकर 6 साल कर दिया गया था।

उदाहरण 10. आपातकाल से भारतीय लोकतंत्र को कौन-कौन से मुख्य सबक मिले? विस्तार से समझाइए।

- › पहला सबक: भारतीय लोकतंत्र की ताकत - हमें यह समझ आया कि भले ही कुछ समय के लिए लोकतंत्र पर संकट आया, लेकिन हमारी लोकतांत्रिक व्यवस्था इतनी मजबूत है कि इसे जड़ से खत्म नहीं किया जा सकता। थोड़े समय में ही यह वापस अपनी पटरी पर आ गई।
- › दूसरा सबक: आपातकाल के प्रावधानों में सुधार - संविधान में 'आंतरिक गड़बड़ी' के आधार पर आपातकाल लगाने का जो प्रावधान था, उसे बदलकर अब केवल 'सशस्त्र विद्रोह' की स्थिति में ही आपातकाल लगाने का नियम बनाया गया। साथ ही, अब राष्ट्रपति को मंत्रिमंडल की लिखित सलाह के बाद ही आपातकाल की घोषणा करनी होती है, जिससे मनमानी रोकी जा सके।
- › तीसरा सबक: नागरिक अधिकारों के प्रति जागरूकता - आपातकाल के दौरान नागरिकों के अधिकारों का हनन हुआ, जिससे लोगों में अपने मौलिक अधिकारों के प्रति गहरी समझ और जागरूकता बढ़ी। आपातकाल के बाद न्यायपालिका भी नागरिकों के अधिकारों की रक्षा में ज्यादा सक्रिय हो गई।

उत्तर – आपातकाल से भारतीय लोकतंत्र ने अपनी आंतरिक शक्ति को पहचाना, संवैधानिक प्रावधानों में सुधार किया और नागरिकों को उनके अधिकारों के प्रति अधिक जागरूक बनाया।

उदाहरण 11. 1977 के लोकसभा चुनाव में जनता पार्टी का मुख्य नारा क्या था और इस चुनाव में कांग्रेस की क्या स्थिति रही?

- › 1977 के चुनाव आपातकाल के बाद हुए, जब लोगों में कांग्रेस के खिलाफ काफी नाराजगी थी।
- › विपक्षी दलों ने एकजुट होकर 'जनता पार्टी' का गठन किया और 'लोकतंत्र बचाओ' का नारा दिया।
- › इस चुनाव में जनता पार्टी को स्पष्ट बहुमत मिला और कांग्रेस को आजादी के बाद पहली बार लोकसभा चुनाव में हार का सामना करना पड़ा।

उत्तर – जनता पार्टी का मुख्य नारा 'लोकतंत्र बचाओ' था। कांग्रेस को इस चुनाव में मात्र 154 सीटें मिलीं और वह पहली बार केंद्र में सत्ता से बाहर हो गई।

उदाहरण 12. जनता पार्टी सरकार के पतन के मुख्य कारण क्या थे और 1980 के चुनाव परिणामों ने क्या दर्शाया?

- › पहला कारण था जनता पार्टी के अंदर नेताओं के बीच प्रधानमंत्री पद के लिए होड़ (मोरारजी देसाई, चरण सिंह, जगजीवन राम)।
- › दूसरा कारण था पार्टी में कोई तालमेल न होना, दिशा और नेतृत्व का अभाव, जिससे सरकार कोई ठोस नीति नहीं बना पाई।
- › तीसरा, मोरारजी देसाई की सरकार 28 माह में बहुमत खो बैठी, और चरण सिंह की सरकार भी कांग्रेस का समर्थन हटने से सिर्फ 4 महीने चली।
- › 1980 के मध्यावधि चुनावों में, जनता ने अस्थिर सरकार को दंडित किया और इंदिरा गांधी के नेतृत्व में कांग्रेस पार्टी को प्रचंड बहुमत (353 सीटें) देकर सत्ता में वापस ले आई।
- › यह दर्शाता है कि मतदाता स्थिर और सशक्त नेतृत्व वाली सरकार पसंद करते हैं।

उत्तर – जनता पार्टी सरकार का पतन आंतरिक कलह, नेतृत्व के अभाव और अस्थिरता के कारण हुआ। 1980 के चुनाव परिणामों ने जनता की स्थिर सरकार चुनने की इच्छा और इंदिरा गांधी की मजबूत वापसी को दर्शाया।

उदाहरण 13. आपातकाल के बाद भारतीय दलीय प्रणाली में आए प्रमुख बदलावों की विवेचना कीजिए।

› पहला बदलाव: कांग्रेस का स्वरूप बदला। 1969 से पहले कांग्रेस में अलग-अलग विचार वाले लोग साथ रहते थे, पर आपातकाल के बाद यह पार्टी एक खास विचारधारा और एक नेता (इंदिरा गांधी) पर ज्यादा निर्भर हो गई। वह खुद को गरीबों की एकमात्र हिमायती बताने लगी।

› दूसरा बदलाव: 'गैर-कांग्रेसवाद' की राजनीति का उदय। विपक्षी दलों को समझ आ गया कि अगर कांग्रेस को हराना है, तो उन्हें एक साथ आना होगा और गैर-कांग्रेसी वोट बँटने नहीं चाहिए। 1977 का चुनाव इसी का नतीजा था।

› तीसरा बदलाव: पिछड़ी जातियों की राजनीति का महत्व बढ़ना। 1977 के चुनावों में पिछड़ी जातियों के वोट बहुत निर्णायक साबित हुए, खासकर उत्तर भारत में। इससे पिछड़ी जाति के नेताओं का महत्व बढ़ा और राज्यों में भी गैर-कांग्रेसी सरकारें बनीं।

› चौथा बदलाव: मंडल आयोग की नियुक्ति। पिछड़ी जातियों के बढ़ते प्रभाव के चलते, केंद्र की जनता पार्टी सरकार ने 1979 में मंडल आयोग का गठन किया। इस आयोग ने पिछड़ी जातियों के लिए आरक्षण की सिफारिशें कीं, जिसने आगे चलकर भारतीय राजनीति को एक नई दिशा दी।

उत्तर – आपातकाल ने कांग्रेस के स्वरूप को एक विचारधारा और नेता-केंद्रित पार्टी में बदल दिया, 'गैर-कांग्रेसवाद' को बढ़ावा दिया, और पिछड़ी जातियों की राजनीति को महत्वपूर्ण बना दिया, जिसके परिणामस्वरूप मंडल आयोग का गठन हुआ।

उदाहरण 14. आपातकाल के दौरान संविधानिक और राजनीतिक संकट कैसे उत्पन्न हुए?

› पहला, संविधानिक संकट: सरकार ने संविधान में दिए गए मौलिक अधिकारों को निलंबित कर दिया। जैसे, बोलने की आज़ादी, इकट्ठा होने की आज़ादी छीन ली गई।

› दूसरा, न्यायपालिका की शक्तियों को सीमित किया गया। कोर्ट्स उन लोगों की मदद नहीं कर पा रहे थे जिन्हें गलत तरीके से गिरफ्तार किया गया था।

› तीसरा, संसद को भी कमज़ोर किया गया। विपक्षी सांसदों को जेल में डाल दिया गया, जिससे संसद में बहस और विरोध लगभग खत्म हो गया।

› चौथा, राजनीतिक संकट: सत्ताधारी पार्टी ने अपने बहुमत का दुरुपयोग किया। जयप्रकाश नारायण जैसे नेताओं के जन आंदोलनों को दबाया गया।

› पांचवां, विरोधी आवाज़ों को कुचला गया, प्रेस पर सेंसरशिप लगाई गई, जिससे जनता तक सही खबरें नहीं पहुँच पा रही थीं।

उत्तर – इस प्रकार, आपातकाल में मौलिक अधिकारों के निलंबन और न्यायपालिका पर दबाव से संविधानिक संकट आया, और सत्ताधारी दल द्वारा लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं के उल्लंघन तथा विपक्ष के दमन से राजनीतिक संकट उत्पन्न हुआ।

बोर्ड परीक्षा के लिए खास

- यह अवधारणा बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। आपातकाल के कारणों और उसकी पृष्ठभूमि पर सीधे प्रश्न आ सकते हैं, खासकर न्यायपालिका और सरकार के बीच के विवाद पर ध्यान देना।
- यह विषय बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। आपातकाल के कारणों में आर्थिक और राजनीतिक संदर्भों को अलग-अलग बिंदुओं में समझाना सीखो। आंकड़े (जैसे 80 लाख शरणार्थी, 23% महंगाई) याद रखना और उन्हें अपने उत्तर में शामिल करना बहुत अच्छे अंक दिलाएगा।
- यह विषय बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। केशवानंद भारती मामले का सिद्धांत और सरकार-न्यायपालिका के बीच तनाव के कारणों को विस्तार से समझना और लिखना सीखें, क्योंकि अक्सर इस पर सीधा प्रश्न आता है।
- यह विषय आपातकाल के कारणों और पृष्ठभूमि को समझने के लिए बहुत महत्वपूर्ण है, इसलिए इसके प्रमुख बिंदुओं और प्रभावों पर विशेष ध्यान दें।
- यह विषय बोर्ड परीक्षा के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। अक्सर इस पर सीधे सवाल आते हैं, खासकर इलाहाबाद उच्च न्यायालय के फैसले की तारीख, कारण और आपातकाल की घोषणा के पीछे के प्रमुख घटनाक्रमों पर। ध्यान रखना, 'आंतरिक गड़बड़ी' शब्द अनुच्छेद 352 के संदर्भ में महत्वपूर्ण है।

- आपातकाल के परिणामों पर सीधा प्रश्न अक्सर आता है। प्रेस सेंसरशिप और मौलिक अधिकारों के निष्प्रभावी होने वाले बिंदुओं को विस्तार से समझाना बहुत ज़रूरी है।
- यह फैसला भारतीय लोकतंत्र के इतिहास में एक महत्वपूर्ण और विवादास्पद मोड़ है। इसके कारणों, परिणामों और नागरिकों के अधिकारों पर इसके प्रभाव को ज़रूर तैयार करें, यह बोर्ड परीक्षा में अक्सर पूछा जाता है।
- यह विषय बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। आपातकाल के तीन मुख्य सबक और उनके परिणामों पर सीधे प्रश्न पूछे जाते हैं।
- यह विषय बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। 'जनता पार्टी का उदय', 'आपातकाल के बाद चुनाव का महत्व' और 'कांग्रेस की हार के कारण' इन बिंदुओं को अच्छे से समझकर जाना।
- यह विषय बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। जनता पार्टी के पतन के कारणों और 1980 के चुनाव परिणामों पर सीधे प्रश्न पूछे जा सकते हैं। इस भाग से 'जनता सरकार वेफ पास किसी दिशा, नेतृत्व अथवा एक साझे कार्यक्रम का अभाव था' कथन को ध्यान से समझना और उत्तर में लिखना आपको अच्छे अंक दिलाएगा।
- यह विषय बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। आपातकाल के बाद भारतीय राजनीति में आए दीर्घकालिक बदलावों पर अक्सर सीधे प्रश्न पूछे जाते हैं। कांग्रेस के बदल चुके स्वभाव, गैर-कांग्रेसवाद की अवधारणा और पिछड़ी जातियों की राजनीति के उदय को उदाहरणों के साथ स्पष्ट करने का अभ्यास ज़रूर करना।

एक नज़र में रिवीज़न

- › 1973-75 की घटनाओं से आपातकाल की पृष्ठभूमि तैयार हुई।
- › 1971 के बाद आर्थिक संकट: बांग्लादेश युद्ध, तेल कीमतें बढ़ीं, महंगाई, बेरोजगारी, कृषि गिरावट।
- › न्यायपालिका-सरकार संघर्ष: मौलिक अधिकार, संशोधन शक्ति, CJI नियुक्ति, केशवानंद भारती (बुनियादी ढाँचा)
- › जॉर्ज फर्नांडिस के नेतृत्व में 1974 की राष्ट्रव्यापी रेल हड़ताल, मज़दूर असंतोष।
- › इलाहाबाद HC ने इंदिरा गांधी का निर्वाचन अवैध घोषित किया, फिर JP के आंदोलन पर आपातकाल लगा।
- › विरोध-आंदोलन, नेता जेल, प्रेस सेंसरशिप, RSS-जमात प्रतिबंध, मौलिक अधिकार निष्प्रभावी।
- › निवारक नज़रबंदी: बिना अपराध, आशंका पर गिरफ्तारी; SC ने 1976 में जीवन/स्वतंत्रता का अधिकार सरकार को वापस लेने की अनुमति दी।
- › भारतीय लोकतंत्र मजबूत हुआ, आपातकाल प्रावधान सुधरे, नागरिक अधिकार जागरूकता बढ़ी।
- › 1977 चुनाव: आपातकाल बाद, जनता पार्टी का उदय, कांग्रेस की पहली हार।
- › जनता पार्टी सरकार का पतन (आंतरिक कलह); 1980 में कांग्रेस की इंदिरा गांधी के नेतृत्व में वापसी।
- › आपातकाल ने कांग्रेस का स्वभाव, गैर-कांग्रेसवाद, और पिछड़ी जाति की राजनीति को प्रभावित किया; मंडल आयोग बना।